बी०ए० I हिन्दी प्रतिष्ठा

गद्य के रूप: डॉ० सतीश चन्द्र पाठक

हिन्दी विभाग, एस०एस०कॉलेज
जहानाबाद

पिछले वर्गों में हमने काव्य या कविता की विभिन्न विधाओं के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की। आज हम गद्य साहित्य के विभिन्न रूपों या विधाओं पर प्रकाश डालने का प्रयास करेंगे।

उपन्यास- उपन्यास गद्य की एक नवीन विधा है। अंग्रेजों के आगमन के साथ उनका साहित्य भी आया जिसमें एक नॉवेल नाम की विधा थी जो हिन्दी में उपन्यास के रूप में स्वीकृत हुई। उपन्यास में मानव जीवन को संपूर्णता में चित्रित करने का प्रयास किया जाता है। प्रेमचन्द की परिभाषा ~~द~~ उल्लेखनीय है- "उपन्यास को मैं मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना इसका प्रधान कार्य है।" उपन्यास का गद्य साहित्य में वही स्थान है जो महाकाव्य का काव्यसाहित्य में स्थान है। अर्थात् उपन्यास में नायक के संपूर्ण जीवन को चित्रित किया जाता है इसका फलक बड़ा ~~विशा~~ विशाल होता है। इसमें समाज की विभिन्न परम्पराओं, जीवन शैलियों तथा विभिन्न रूपों का सामंजस्यपूर्ण अंकन होता है। इसमें एक साथ अनेक कथाएं चल सकती हैं किन्तु उनका पर्यवसान मूलकथा में ही होता है।

कहानी:- कहानी भारतीयों के लिए कोई नई विधा नहीं है किन्तु यह कहानी मूलत: आधुनिक कहानी है जिसका

पूर्व के साहित्य में अभाव था भारत में इसके पूर्व जो कथासाहित्य था वह मूलतः कल्पना से अतिरंजित एवं समाज से कटा हुआ साहित्य था अतः समाज के लिए अर्थहीन था। जबकि आधुनिक कहानियाँ समाज की जीवंत तस्वीर समेटकर, उसे जनोन्मुखी बनाकर प्रस्तुत करने वाली विधा है। कहानी जीवन के एक क्षण या प्रसंग विशेष को चित्रित करने वाली साहित्यिक विधा है। इसमें नायक के संपूर्ण जीवन को चित्रित नहीं किया जाता वरन उसके जीवन के निखार एवं उल्लेख-नीय क्षण का चित्रित किया जाता है।

<u>निबंध</u> :- अपने विचारों को किसी विषय विशेष पर केन्द्रित कर उसकी विशेषताओं और संभावनाओं को रेखांकित करने वाली विधा निबंध है। इसके दो प्रकार हैं- (i) निबंध (ii) ललित निबंध या व्यक्तिगत निबंध। निबंध में गंभीरता होती है। विवेच्य विषय का गहनतम के साथ ही सूक्ष्मतम वर्णन एवं विश्लेषण निबंध कहलाता है। जबकि ललित निबंध में समग्र विषय का वर्णन तो उसी सूक्ष्मता एवं विस्तार के साथ होता है, किंतु उसका उद्देश्य हास्यपरक या उत्फुल्लता होता है।

शिवपूजन सहाय, अध्यापक पूर्णसिंह, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय आदि के निबंधकार एवं ललित निबंधकारों में परिगणित किए जाते हैं।

<u>संस्मरण</u> :- अपनी स्मृतियों को आधार बनाकर किसी व्यक्ति या स्थान के बारे में प्रस्तुत गद्यात्मक विधा संस्मरण कही जाती है। इसमें अतीत की घटनाओं को आधार बनाया जाता है। हिंदी साहित्य में महादेवी वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, जैनेंद्र कुमार जैसे साहित्यकारों ने प्रचुर मात्रा में संस्मरण लिखे हैं।

<u>शब्दचित्र या रेखाचित्र</u> :- जिस गद्यात्मक विधा में रंग और रेखाओं के स्थान पर शब्दों के द्वारा चित्र प्रस्तुत करने का विधान किया जाए, उसे शब्दचित्र कहा जाता है। शब्द चित्र में शब्दों का प्रयोग इस कुशलता से किया जाता है कि वर्ण्य

विषय की सारी भौतिक या बाह्य एवं आंतरिक विशेषताएं स्पष्ट हो जाएं वहाँ शब्दचित्र का आविर्भाव होता है।

महादेवी वर्मा का - गौरा, अलोपीदीन, रामवृक्ष बेनीपुरी का माटी की मूरतें, उदयराज सिंह का गांव के खिलौने इत्यादि श्रेष्ठ शब्दचित्र के उदाहरण हैं।

<u>आत्मकथा</u> - आधुनिककाल में यह विधा बहुत लोकप्रिय है जब कोई व्यक्ति अपने जीवन की घटनाओं या जीवन शैली के बारे में स्वयं लिखे तो उसे आत्मकथा कहते हैं। गांधीजी की 'आत्मकथा' सत्य के प्रयोग शीर्षक से प्रकाशित है तो वहीं नेहरू जी की - मेरी आत्मकथा, राजेन्द्र प्रसाद की 'मेरी राम कहानी' तो ओम प्रकाश वाल्मीकि की - जूठन - श्रेष्ठ आत्मकथाएं हैं।

<u>जीवनी</u> - जब किसी व्यक्ति के जीवन के बारे में कोई दूसरा व्यक्ति लिखता है तो वह जीवनी कहलाती है। बहुत से ऐसे लोग हैं जो अपने जीवन का प्रचार-प्रसार नहीं चाहते, किन्तु उनका जीवन समाज के लिए प्रेरणाप्रद हो सकता है। ऐसे में उनके जीवन का लिपिबद्ध हुए आलेख को जीवनी कह सकते हैं।

<u>रिपोर्ताज</u> :- रिपोर्ताज शब्द अंग्रेजी के रिपोर्ट शब्द से बना है जिसका अर्थ होता है विवरण प्रस्तुत करना। किसी स्थल या स्थान विशेष का आंखों देखा हाल प्रस्तुत करना रिपोर्ताज कहलाता है। यह एक रेडियो या दूरदर्शन के लिए प्रस्तुत होने वाली विधा है। वर्तमान में इसका प्रयोग चलचित्रों में हो रहा है। धर्मवीर भारती ने भारत-पाक युद्ध के समय पत्रिका में छापने के लिए श्रेष्ठ रिपोर्ताजों का लेखन किया था

इस प्रकार हमने देखा कि गद्य एवं पद्य के कितने सारे रूप होते हैं और उनकी क्या विशेषताएं हैं।